अज्ञेय

प्रणाम

भोर
नील के पटल पर एक नाम
ओस में खिल आते हैं सूर्य
प्रकाश ! प्रणाम ।

‘अज्ञेय’, **ऐसा कोई घर आपने देखा है**
दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1986:39